नवभारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

महिला मतदाताओं का निर्णायक उभार

सोमवार को जैसे ही बिहार विधानसभा चुनाव की तिथियों की घोषणा हुई, राजनीतिक सरगर्मी अपने चरम पर पहुंच गई. परंतु इस बार माहौल में एक नया आयाम स्पष्ट दिखाई दे रहा है,महिला मतदाताओं की निर्णायक भूमिका. बिहार की राजनीति में महिलाएं अब मात्र 'सहायक मतदाता' नहीं रहीं, बल्कि नीतियों, अभियानों और चुनावी रणनीतियों के केंद्र में आ चुकी हैं. हर दल इस शक्ति को महसूस कर रहा है और अपने-अपने तरीके से उन्हें आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है.

दरअसल, पिछले दो दशकों में बिहार में महिला मतदाताओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. 2020 के विधानसभा चुनाव में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से लगभग चार फ़ीसदी अधिक था. ग्रामीण इलाकों में तो यह अंतर और भी ज्यादा था. नीतीश कुमार की 'सशक्त नारी-सशक्त बिहार' जैसी योजनाओं ने एक समय महिला वोट बैंक को सुचारु रूप से संगठित किया, जिसने उन्हें लगातार सत्ता में बने रहने का आधार भी दिया. लेकिन अब परिदृश्य बदल चुका है, महिला मतदाता केवल 'लाभार्थी' नहीं रहीं, बल्कि वे अब नीति-निर्धारण की सहभागी और सशक्त समीक्षक बन चुकी हैं. यही कारण है कि तेजस्वी यादव से लेकर प्रशांत किशोर तक, हर राजनीतिक चेहरा महिलाओं तक सीधा संवाद स्थापित करने की कोशिश कर रहा है. तेजस्वी अपनी सभाओं में 'समान काम, समान वेतन' और महिला सुरक्षा के मुद्दे उठाते हैं, तो प्रशांत किशोर अपने जन सुराज अभियान के जरिए पंचायत स्तर पर महिला नेतृत्व को प्राथमिकता दे रहे हैं. भाजपा और जदयू अपने पारंपरिक महिला कल्याण योजनाओं—उज्ज्वला, हर घर नल, साइकिल योजना, और स्वयं सहायता समूहों के सहारे इस तबके में भरोसा बनाए रखने में जुटी हैं. राजनीति के जानकार मानते हैं कि बिहार में महिलाओं की राजनीतिक चेतना अब जाति और परंपरा से आगे निकल चुकी है. उन्हें यह एहसास हो गया है कि उनका वोट शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक सुरक्षा से सीधे जुड़ा है. यही कारण है कि राजनीतिक दलों की चुनावी घोषणाओं में अब महिला उद्यमिता, स्वास्थ्य, पोषण और डिजिटल साक्षरता जैसे बिंदु प्रमुखता से शामिल किए जा रहे हैं.

इस बार चुनावी प्रचार में यह भी देखने को मिल रहा है कि महिला नेतृत्व को प्रतीक के रूप में नहीं, विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. युवा महिला उम्मीदवारों को टिकट देने, महिला पंचायत प्रमुखों और स्वयं सहायता समूहों की ब्रांड एम्बेसडर के रूप में भागीदारी बढ़ाने की प्रवृत्ति तेज हुई है. यह बिहार की सामाजिक-राजनीतिक संरचना में गहरे परिवर्तन का संकेत है. कुल मिलाकर, 2025 का बिहार चुनाव इस बात की परीक्षा भी होगा कि क्या महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक चेतना वास्तव में सत्ता परिवर्तन का निर्णायक कारण बन सकती है या नहीं. यह भी स्पष्ट है कि अब जो दल महिला मतदाता को केवल 'लाभार्थी वर्ग' समझेगा, उसे झटका लगना तय है.

बिहार की राजनीति में महिला मतदाताओं की यह नई जागरूकता केवल किसी एक दल के पक्ष में नहीं, बल्कि लोकतंत्र की दिशा तय करने वाली एक शांत क्रांति है. आने वाले वर्षों में इसका प्रभाव न केवल बिहार, बल्कि पूरे देश की राजनीति पर गहराई से महसूस किया जाएगा.

देश में सतत पर्यटन से साझा समृद्धि

गजेंद्र सिंह शेखावत

पर्यटन केवल यात्रा करना नहीं है, यह लोगों को जोड़ने वाला पुल है, रोज़गार का साधन है और हमारी संस्कृति को दुनिया तक पहुंचाने का माध्यम है. पर्यटन और सतत परिवर्तन को समर्पित इस विश्व पर्यटन दिवस पर, यह समझना जरूरी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व में भारत की पर्यटन यात्रा को कैसे नया रूप दिया गया है. जो पहले कभी मौसमी और बिखरा हुआ क्षेत्र था, वह आज योजनाबद्ध, समावेशी और सतत राष्ट्रीय विकास का प्रमुख साधन बन गया है.

> भारत का अनुभव यह साबित करता है कि जब सुसंगत नीति, राजकोषीय विवेक और समुदाय की भागीदारी दूरदर्शी नेतृत्व के तहत एक साथ आती है, तो असली बदलाव संभव होता है. इस विश्व पर्यटन दिवस पर, आइए हम यह संकल्प लें कि जिम्मेदारी के साथ यात्रा करेंगे, स्थानीय रोज़गार का समर्थन करेंगे और हर यात्रा कार्यक्रम में विकसित भारत के वादे को जीवंत रखेंगे. सही ढंग से पोषित पर्यटन न केवल हमारी अर्थव्यवस्था का स्तंभ बनेगा, बल्कि भारत की सभ्यतागत लोक व्यवहार यानी खुला, सहनशील और आतिथ्यपूर्ण का जीवित प्रमाण भी बनेगा. आगे का रास्ता लंबा है, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हमने वाहन तैयार कर लिया है. अब हमें इसे सावधानी, साहस और साझा उद्देश्य की भावना के साथ चलाना होगा.

यह बदलाव केवल कल्पनाओं में नहीं, बल्कि लोगों की ज़िंदगी में दिखाई देता है. जून 2025 तक भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या 16.5 लाख पहुंच गई, विदेश यात्रा करने वाले भारतीयों की संख्या 84.4 लाख रही और पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय 51,532 करोड़ तक पहुंची. अकेले 2023-24 में ही इस क्षेत्र ने जीडीपी में 15.73 लाख करोड़ का योगदान दिया, जो अर्थव्यवस्था का पांच प्रतिशत से अधिक है और 8.4 करोड़ से ज़्यादा नौकरियों को सहारा दिया. इन आंकड़ों के पीछे कारीगरों को नए बाज़ार मिलना, परिवारों का होमस्टे शुरू करना, और गाइड, चालक व छोटे व्यवसायियों के लिए लगातार काम और मांग का अवसर जुड़ा हुआ है.

इस प्रगति के केंद्र में प्रधानमंत्री का यह विश्वास है कि पर्यटन को राष्ट्रीय प्राथमिकता होना चाहिए, न कि कोई हाशिये की गतिविधि. नए हवाईअड्डों, आधुनिक रेल नेटवर्क, नवनिर्मित राजमार्गों और आंतरिक जलमार्गों से बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी का विस्तार किया गया. उड़ान योजना ने हवाई यात्रा को छोटे शहरों की पहुंच में ला दिया. धरोहर स्थलों और तीर्थ यात्राओं के मार्गों तक बेहतर अंतिम कनेक्टिविटी ने उन लाखों लोगों के लिए यात्रा संभव कर दी, जो पहले दूरी या खर्च के कारण वंचित रह जाते थे. इस तरह पर्यटन अब केवल शहरी विलासिता न होकर संतुलित क्षेत्रीय विकास का साधन बन गया है. गंतव्य (डेस्टिनेशन) विकास भी इसी दृष्टि से आगे बढ़ाया गया है. स्वदेश दर्शन 2.0 और प्रसाद जैसे कार्यक्रम स्थिरता और सांस्कृतिक अखंडता को अपने केंद्र में रखते हैं. डेस्टिनेशन मैनेजमेंट ऑर्गनाइजेशन की शुरुआत ने सरकार, निजी क्षेत्र और स्थानीय समुदायों को एक साथ जोड़ा है, ताकि संसाधनों का समझदारी से उपयोग हो और लाभ सब तक समान रूप से पहुंचे.

प्रधानमंत्री ने यह भी नया दृष्टिकोण दिया है कि भारत दुनिया के सामने खुद को कैसे प्रस्तुत करे. नए रूप में अतुल्य भारत पोर्टल, वैश्विक यात्रा प्लेटफॉर्म्स के साथ साझेदारी और डिजिटल स्टोरीटेलिंग के नए तरीके ने सबसे छोटे संचालकों, ग्रामीण मेजबानों, होमस्टे चलाने वाले परिवार, सांस्कृतिक उद्यमियों को भी वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने का अवसर दिया है. तकनीक अब केवल प्रचार का साधन ही नहीं रही, बल्कि डेटा-आधारित प्रबंधन के ज़रिए संवेदनशील स्थलों की सुरक्षा का माध्यम भी बन गई है.

हालांकि, इस बदलाव की सबसे बड़ी विशेषता स्थिरता है. प्रधानमंत्री ने अपने व्यापक लाइफ आंदोलन(लाइफस्टाइल फॉर एंवायरमेंट) को आगे बढ़ाते हुए ट्रैवल फॉर लाइफ की शुरुआत की, जिसमें पर्यटन को भी पर्यावरण संरक्षण से जोड़ा गया. कम प्रभाव वाले ग्रामीण अनुभवों से लेकर पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बुनियादी ढांचे और ज़िम्मेदार तीर्थ प्रबंधन तक, पूरा ज़ोर इस बात पर है कि यात्रा प्रकृति को संवारने वाली हो, न कि उसे नुकसान पहुँचाने वाली. भारत की जी20 अध्यक्षता के तहत, वैश्विक पर्यटन को सतत विकास लक्ष्यों के साथ जोड़ने के लिए गोवा रोडमैप को आगे बढ़ाया गया, जिसमें हरित विकास, कौशल विकास, डिजिटलीकरण और सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यमों के समर्थन को वैश्विक चर्चा के केंद्र में रखा गया.

(लेखक भारत सरकार में केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री हैं.)

एमपी भाजपा की ताकत हमेशा से उसका संगठनात्मक अनुशासन और चुनावी मैनेजमेंट रहा है

मध्यप्रदेश भाजपा एकजुटता के नारों के बीच गुटबाजी के संकेत

श्याम यादव

इन दिनों मध्यप्रदेश भाजपा में जोर आजमाइश का दौर चल रहा है. पार्टी में एकजुटता दिखावटी है. जबकि, हर इलाके में स्थानीय नेता आपस मे ही गुत्थम-गुत्था हो रहे है. नए अध्यक्ष ने आते ही सख्ती का माहौल जरूर बनाया, पर उसे दरकते देर नहीं लगी. ग्वालियर, रीवा, इंदौर से लगाकर बुंदेलखंड तक में अलग-अलग गुट बन गए. ये हालात भविष्य के लिए अच्छा संकेत नहीं है.

भारतीय जनता पार्टी ने मध्यप्रदेश की राजनीति में लंबे समय से एक मजबूत आधार बना रखा है. संगठनात्मक मजबूती, कार्यकर्ताओं की जमीनी पकड़ और केंद्रीय नेतृत्व का लगातार मार्गदर्शन पार्टी को अन्य दलों से अलग बनाता रहा है. लेकिन पिछले कुछ वर्षों से यह साफ दिखने लगा है कि पार्टी की भीतरी खींचतान और गुटबाजी लगातार तेज होती जा रही है. प्रधानमंत्री और राष्ट्रीय नेतृत्व की सख्त नसीहतों के बावजूद प्रदेश की राजनीति में आपसी मनमुटाव, अहंकार और विरोधाभासी रुझान खुले तौर पर दिखाई दे रहे हैं.

यह स्थिति केवल छोटे कार्यकर्ताओं तक सीमित नहीं है बल्कि डिप्टी सीएम से लेकर मंत्रियों, सांसदों और विधायकों तक फैली हुई है. ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को लेकर उठी हलचल इसका ताज़ा उदाहरण है. मुरैना दौरे के दौरान सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक पोस्टर ने पूरी राजनीति को हिला कर रख दिया. पोस्टर में साफ लिखा गया कि सिंधिया को मुख्यमंत्री बनाया जाए, अन्यथा %अपनी खैर मनाओ.% इस प्रकार का संदेश न केवल संगठनात्मक अनुशासन के विपरीत है बल्कि यह यह भी दर्शाता है कि पार्टी के भीतर अभी भी सत्ता की होड़ जारी है. प्रदेश में जब भी कोई बड़ा कार्यक्रम होता है, किसी न किसी रूप में ऐसी पोस्टरबाजी सामने आ ही जाती है. शिकायतें पार्टी मुख्यालय तक पहुंचती हैं और उसके बाद अनुशासनात्मक कार्यवाही की चेतावनी दी जाती है. लेकिन हकीकत यह है कि इस तरह की घटनाएं थमती नहीं हैं.

रीवा में जो वाकया सामने आया, उसने स्थिति को और स्पष्ट कर दिया. पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्रीनिवास तिवारी की जन्मशताब्दी समारोह में मुख्यमंत्री तो शामिल हुए लेकिन स्वागत पोस्टरों से डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल की तस्वीर गायब रही. यह केवल साधारण चूक नहीं मानी जा सकती क्योंकि पूरे शहर में लगाए गए पोस्टरों से किसी एक वरिष्ठ नेता की तस्वीर का गायब होना यह संदेश देता है कि स्थानीय स्तर पर आपसी खींचतान कितनी गहरी है. डिप्टी सीएम की नाराजगी इस हद तक बढ़ गई कि उन्होंने कार्यक्रम में ही शिरकत नहीं की. इस तरह की घटनाएं केवल व्यक्ति विशेष को चोट नहीं पहुंचातीं बल्कि संगठन की एकजुटता पर भी गहरा सवाल खड़ा करती हैं.

देवास में विधायक गायत्री राजे पवार के पोस्टरों को हटाए जाने का मामला इसी श्रृंखला की एक और कड़ी है. नवरात्रि से पहले शहर में उनके पोस्टर लगाए गए थे, लेकिन नगर निगम ने इन्हें हटवा दिया. इससे स्थिति इतनी बिगड़ी कि विधायक का पुत्र विक्रम राव अपने समर्थकों के साथ सड़क पर उतर आये और निगम अधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया. इस दौरान खुली धमकियां दी गईं और माहौल तनावपूर्ण हो गया. सवाल यह है कि आखिर किस आधार पर जनप्रतिनिधियों के पोस्टर हटाए जाते हैं और क्यों बार-बार ऐसे विवाद सामने आते हैं. यह केवल प्रशासनिक कदम नहीं लगता बल्कि इसके पीछे भी कहीं न कहीं राजनीतिक द्वेष और गुटबाजी का असर साफ झलकता है. इन तीन घटनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि भाजपा के भीतर अनुशासन की स्थिति कमजोर पड़ रही है. पचमढ़ी में हुए चिंतन शिविर में राष्ट्रीय नेताओं ने बार-बार संदेश दिया कि संगठन सबसे ऊपर है और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को नियंत्रित करना जरूरी है.

> मध्यप्रदेश भाजपा की ताकत हमेशा से उसका संगठनात्मक अनुशासन और चुनावी मैनेजमेंट रहा है. लेकिन जब खुद विधायक, मंत्री और सांसद अनुशासन तोड़कर आपसी टकराव सार्वजनिक रूप से दिखाने लगें तो यह संगठन के लिए गंभीर संकट का संकेत है. ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में सिंधिया समर्थकों और पुराने भाजपा नेताओं के बीच खींचतान किसी से छुपी नहीं है. इसी तरह महाकौशल और मालवा-निमा में भी कई नेताओं के बीच प्रतिस्पर्धा का असर पार्टी की छवि पर पड़ता है. आने वाले समय में यह गुटबाजी केवल आंतरिक असंतोष तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह चुनावी समीकरणों पर भी असर डाल सकती है. जनता ऐसे हालातों को बारीकी से देखती है और जब पार्टी के भीतर ही एकता नहीं दिखती तो मतदाता का भरोसा भी डगमगाता है. विपक्ष हमेशा ऐसे मुद्दों को भुनाने के लिए तत्पर रहता है. कांग्रेस पहले ही कई बार यह आरोप लगा चुकी है कि भाजपा केवल सत्ता की लालसा के लिए एकजुट दिखती है.

खानी थी मैगी, बेचने गया अंगूठी

मैगी का आकर्षण किसी को मैडनेस या पागलपन तक पहुंचा सकता है. आज के बच्चों को हलवा, उपमा, पोहा, मठरी, दालमोठ, चिवड़ा, इडली जैसा घरेलू नाश्ता पसंद नहीं है. उन्हें सेवइयां या वर्मिसेली नहीं, बल्कि मैगी चाहिए जो कि आज का सुपर फास्टफूड है. टीवी के विज्ञापन को याद कीजिए जिसमें बच्चा कहता है- मम्मी, भूख लगी है, जवाब में मम्मी कहती है- बस 2 मिनिट्स ! वह 2 मिनिट में मैगी बनाकर दे देती है. बच्चा भी खुश, मम्मी को भी तसल्ली ! किचन में कौन वक्त बर्बाद करे? पानी में मैगी उबाली, मसाले की पुड़?या डाली और इंस्टेंट नाश्ता बनकर तैयार! बच्चे ही नहीं, कुछ बड़े भी मैगी खाने लगे हैं. ज्यादा टेस्ट या झनझनाहट के लिए मसाले की 2 पुड़?या मिला देते हैं. रोज ऐसा खाने से पेट में अल्सर हो जाता है. मैगी से इतनी दोस्ती करना महंगा पड़ता है. मैगी की दीवानगी का नजारा कानपुर में देखा गया. मां ने मैगी के लिए पैसे देने से मना किया तो एक 13 साल का बच्चा अपनी बहन की सगाई की अंगूठी लेकर सराफा बाजार में बेचने पहुंचा. सराफ शरीफ आदमी था. उसने बच्चे से मोबाइल नंबर पूछा और उसकी मम्मी को फोन कर दुकान में बुलवाया और पूछा कि

मां ने मैगी के लिए पैसे देने से मना किया तो एक 13 साल का बच्चा अपनी बहन की सगाई की अंगूठी लेकर सराफा बाजार में बेचने पहुंचा.

क्या यह अंगूठी आपकी है? महिला ने बताया कि यदि यह अंगूठी खो जाती तो बेटी की शादी टूट सकती थी. यह एंगेजमेंट रिंग है. दुकानदार ने अंगूठी लौटा दी. ऐसा है मैगी का मैजिक कि बच्चे से रहा नहीं गया. अंगूठी बेचने की नादानी पर उतर आया. 13 साल की उम्र में बादशाह अकबर ने हिंदुस्तान की हुकूमत संभाली थी. वह मैगी के लालच में नहीं पड़ा था. आज के बच्चों को नहीं चाहिए परंपरागत नाश्ता, उन्हें चाहिए मैगी, नूडल्स या पास्ता! मैगी पर कुछ समय के लिए रोक लगी थी क्योंकि उसमें हानिकारक रसायन पाए गए थे. बाद में फिर धड़ल्ले से बिकने लगी. अब मैगी बनाने वाली कंपनी चाहे तो उस बच्चे को अपना मॉडल बना ले, जो मैगी के एक पैकेट के लिए अंगूठी बेचने निकला था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

अमित शाह ने पते की बात कही मोदी को फ्रेश होने की जरूरत नहीं

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से जब पूछा गया कि वह प्रधानमंत्री मोदी की कोई ऐसी विशेषता या खासियत बताएं जो पुराने प्रधानमंत्रियों में नहीं देखी गई थी. इस पर शाह ने कहा कि शायद आपने भारत का कोई ऐसा प्रधानमंत्री नहीं देखा होगा जो किसी महत्वपूर्ण बैठक में स्टेज पर बैठ जाने के बाद फ्रेश होने के लिए कभी नहीं उठता.

हमने कहा, यदि 75 वर्ष की उम्र में भी कोई व्यक्ति शरीर की प्राकृतिक क्रियाओं को घंटों अपने नियंत्रण में रखता है, तो आश्चर्य की बात है. शाह का आशय है कि मोदी शंकारहित हैं. वह टॉयलेट नहीं जाते. कोई हठयोगी ही ऐसा कर सकता है. वैसे आज किसी डॉक्टर से पूछें तो वह कहेगा कि प्राकृतिक वेग को हरगिज रोकना नहीं चाहिए. समय-समय पर टॉयलेट जाकर फ्रेश या तरोताजा हो जाना चाहिए. भारत में हम जिसे वॉशरूम कहते हैं वह अमेरिका में

रेस्टरूम कहलाता है. शरीर से त्याज्य पदार्थ निकल जाए तो तसल्ली मिलती है. अमित शाह कभी किसी पूर्व प्रधानमंत्री के साथ नहीं रहे, इसलिए उनके बारे में वह पक्की जानकारी नहीं दे सकते कि वह कितनी बार टॉयलेट जाते थे.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, टॉयलेट और इंसान के फ्रेश होने का महत्व मोदी से अधिक कोई नहीं जानता. उन्होंने स्वच्छता अभियान के तहत हर घर में टॉयलेट बनाने को प्रोत्साहन दिया. संभवतः उनकी प्रेरणा से अक्षयकुमार ने टॉयलेट नामक फिल्म में अभिनय किया. उस फिल्म में हीरो अपनी पत्नी को स्टेशन ले जाता है जहां ट्रेन के टॉयलेट में वह बेचारी फ्रेश हो सके. इसी तरह स्वच्छता का संदेश देने के लिए अक्षयकुमार ने फिल्म पैडमैन में अभिनय किया था.

हमने कहा, अमित शाह चाहे तो कह सकते थे कि मोदी ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जो देश को सशक्त बनाने के लिए 365 दिनों में प्रतिदिन 24 घंटे काम करते हैं. वह यह भी बता सकते थे कि मोदी का अपना परिवार नहीं है. सारा भारत ही उनका परिवार है. उन्हें व्यर्थ के शौक नहीं है और वह अदाणी व अंबानी छोड़कर दोस्तों की महफिल नहीं पालते.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12044 - डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. वस्तु, चीज, ऐसी वस्तु जो स्थान घेरती है (सं.) 2. रासायनिक विधि से जड़ी-बूटियों या खनिजों से बना नमक, सार, शोरा (सं.) 3. वह श्वेत पर्दा जिस पर चलचित्र दिखाया जाता है 4. आग, अग्नि (सं.) 5. टूटी-फूटी वस्तुओं को बेचने वाला व्यक्ति 8. भूमि की नाप जोख करने वाला (सर्वेअर) 10. टीसना, सालना 11. वह सीधी रेखा जो एक ही दिशा में गई हो 12. समेत, सहित, सहायक 13. प्रथा, रिवाज, किसी वस्तु का बराबर व्यवहार में आते रहना या होना 15. एक कंटीला वृक्ष या उसका फल, दफा, बार 16. पेड़ का धड़ 17. सपना, स्वप्न (उर्दू)

बाएं से दाएं

1.पक्ष (पंद्रह दिनों में) केवल एक बार भोजन करना (सं.) 4. न थकनेवाला 6. पत्नी, रखने वाला, सूली, फांसी 7. युवा 8. बीता हुआ समय, प्रेत, गत 9. काठ, काष्ठ, ईंधन 11. कोई काम या बात पूर्ण करना या समाप्त करना 12. घोड़े की एक प्रकार की तेज चाल 13. प्रत्यक्ष, सबके सामने, प्रत्यक्ष रूप में 14. कंठ, गले की नली (उर्दू) 15. विक्रय करना, मूल्य लेकर कोई वस्तु देना 16. द्रव, बहने वाला (सं.) 18. खांस कर कफ बाहर निकालना 19. किस्मत, भाग्य (उर्दू)

Solution 12043

आ	मो	■	म	हा	ज	न	■
का	ग	■	क	स	■	क	ला
श	रा	र	त	■	का	ली	न
■	■	ज	ब	र	न	■	त
क	मा	नी	■	ती	■	खो	■
ला	र	■	क	■	ग्रा	ह	क
का	■	सो	म	र	स	■	शि
र	स	म	ला	ई	■	जो	श

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचारों की प्राप्ति होगी. सुख प्राप्त होगा. नवीन मित्र से भेंट होगी. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी. वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से राजनीतिक लाभ प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पडेगा. व्यर्थ के वाद विवाद एवं मतभेद बढेंगे.

मेष ओर वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है. शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा का योग है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से अच्छा मधुर एवं स्वविवेकी होगा, हष्ट पुष्ट एवं व्यक्तित्ववान होगा, शरीर कोमल होगा, यह अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, बुद्धिमानी से काम करेगा, मित्रों की संख्या सीमित रहेगी, प्रवास का शौकीन होगा.

मेष- मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी, दूर दराज की यात्रा होगी, आर्थिक कार्यो में सावधानी रखें.

वृषभ- घर में किसी अतिथि आमन होने से व्यस्तता रहेगी, अचानक किसी अनसोचे कार्यो में सम्मिलित होना पड़ेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

मिथुन- भावनाओं पर काबू रखें, नौकरी एवं राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा, सोचे हुये कार्यो में संदेह रह सकता है.

कर्क- एक से अधिक कार्य शुरू करने का मन बनेगा, धार्मिक कार्यो में खर्च होगा, विवादास्पद मामलों को सुलझायें, पदोन्नति का योग है.

सिंह- मेहमानों की आवाजाही रहने से व्यस्त रहेंगे, व्यापार में सावधानी रखें, कोई नवीन सुखद समाचार मिलेगा, निजी पुरूषार्थ से लाभ होगा.

कन्या- बुजुर्गो के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, व्यवसाय में सफलता मिलेगी, पारिवारिक जिम्मेदारी आ सकती है, विवादास्पद कार्यो से दूर रहना हितकर रहेगा.

तुला- सकारात्मक सोच लाभकारी रहेगी, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, शत्रु वर्ग सक्रिय रहेगा, सूझबूझ से काम बनेगा,

वृश्चिक- जीवनसाथी की भावनाओं का सम्मान करें, परिवार में मतभेद हो सकता है, मानसिक संतुलन बनाये रखें, कामकाज के प्रति निष्ठा रहेगी.

धनु- आप जिसे घाटे का सौदा समझते हैं, उसमें लाभ होगा, वाहन चलाते समय सावधानी रखें, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, कामकाज के प्रति सतर्क रहें.

मकर- अधिकारियों की अनदेखी से नुकसान होगा, साहस पराक्रम में वृद्धि होगी, यश मिलगो. अतिथि आगमन होगा, संयम से कार्य करें.

कुम्भ- कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी, सुख साधनों में वृद्धि होगी, अतिथि आगमन होगा, कोई मांगलिक कार्यो की योजना बनेगी.

मीन- अपनी गलती मानने की बजाय दूसरों को दोष देंगे, जिससे संबंध बिगड़ सकते हैं, अधिकारियों के आदेश की अवहेलना न करें.

उदयकालीन ग्रह चाल

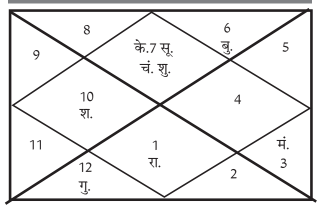

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा बुधवासरे प्रात: 7/29 तदुपरि द्वितीया तिथौ रातअंत 5/11, अश्विनी नक्षत्रे रात 2/9, व्याघात योगे प्रात: 8/53 तदुपरि हर्षण योगे रातअंत 5/53, कौलव करणे सू.उ. 6/11, सू.अ. 5/49, चन्द्रचार मेष, पर्व- अशून्यशयन व्रत, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से रूई, सूत, कपास, सूत, सन्, जूट, पाट, बारदाना, आदि के भाव में घटबढ़ रहेगी, सोना, चांदी, के भाव में उतार चढ़ाव आयेगा, भाग्यांक 2508 है.

SUDOKU 7176

2						5		
	1			8				9
7					4			
			9			1		
	3						6	
		8			5			
			3					8
5				6			2	
		4						7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7175

2	3	6	8	5	1	4	9	7
9	4	5	7	6	3	8	2	1
1	7	8	2	9	4	6	5	3
3	1	9	6	7	2	5	4	8
5	6	2	1	4	8	3	7	9
7	8	4	5	3	9	1	6	2
4	9	1	3	2	5	7	8	6
8	2	7	4	1	6	9	3	5
6	5	3	9	8	7	2	1	4